

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मुरझाया फूल

महादेवी वर्मा

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



महादेवी वर्मा

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवयित्री परिचय

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य की छायावादी धारा की प्रमुख कवयित्री थीं। इन्हें इनकी विरह से भरी कविताओं के लिए 'आधुनिक युग की मीराँ' कहा जाता है। इनके पिता का नाम गोविंद प्रसाद वर्मा और माँ का नाम हेमरानी वर्मा था।

जन्म: 1907, फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश)।

शिक्षा: महादेवी वर्मा की शिक्षा छठी कक्षा तक हो सकी। फिर उनका विवाह हो गया लेकिन विवाह संबंध आगे न बढ़ पाने के कारण इन्होंने पुनः शिक्षा प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाया और

प्रयाग विश्वविद्यालय से. संस्कृत और दर्शन शास्त्र में बी. ए. किया। उसके बाद 1933 ई. में संस्कृत में एम. ए. भी किया।

पेशाः प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या।

काव्य-भाषा : संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली, जिसमें कोमलता, मधुरता, गेयता आदि गुण है।

प्रमुख रचनाएँ: काव्यः 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'यामा'।

गद्यः 'स्मृति की रेखाएँ', 'अतीत के चलचित्र', 'श्रृंखला की कड़ियाँ' और "पथ के साथी"।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सम्मानः 'पद्मश्री' और 'यामा' काव्य-संकलन के लिए 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

निधन: 1987 ई.।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मुरझाया फूल शीर्षक कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा ने कली के खिलकर फूल बनने से लेकर मुरझाते हुए भूमि पर गिरने तक का आकर्षक वर्णन किया है। कली और खिले फूल के प्रति सब आकर्षित होते हैं, जबकि मुरझाए फूल के प्रति उनका कोई आकर्षण नहीं रहता। यह संसार की स्वार्थपरता है, परंतु इससे बेखबर रहकर फूल अपना सर्वस्व दान करते हुए सबको हर्षाता जाता है। यहाँ कवयित्री ने प्रकारान्तर से मानव जीवन की बात करते हुए महत्वपूर्ण संदेश दिया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



था कली के रूप शैशव
में अहा, सूखे सुमन।
हास्य करता था, खिलाता
अंक में तुझको पवन ॥

शैशव	–	শৈশৱ
सुमन	–	ফুল
अंक	–	কোলা



खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर ॥

मंजूल	-	(সুন্দৰ)
लुब्ध	-	মোহিত
भ्रमर	-	ভোমোৰা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation



स्निग्ध किरणें चंद्र की
तुझको हँसाती थीं सदा
ओस मुक्ता-जाल से
श्रृंगारती थी सर्वदा ॥

स्निग्ध	-	নির্মল
मुक्ता	-	মুকুতা, ৰত্ন
श्रृंगारती	-	সাজোন-কাচোন
सर्वदा	-	সদাই



वायु पंखा झल रही,
निद्रा विवश करती तुझे।
यत्न माली का रहा
आनंद से भरता तुझे ॥

वायु - বতাহ
निद्रा - টোপনি, নিদ্রা
विवश - ভোমোৰা



कर रहा अठखेलियाँ
इतरा सदा उद्यान में।
अंत का यह दृश्य आया,
था कभी क्या ध्यान में ॥

अठखेलियाँ	- খেলা-ধূলা
उद्यान	- বাগিচা, উদ্যান



सो रहा अब तू धरा पर
शुष्क बिखराया हुआ।
गंध, कोमलता, नहीं
मुख-मंजु मुरझाया हुआ ॥

शुष्क - শুকান

आज तुझको देखकर
चाहक भ्रमर आता नहीं।
वृक्ष भी खोकर तुझे
हा, अश्रु बरसाता नहीं ॥

अश्रु – চকুলো



जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया ॥

भू – भूमि, माटि

कर दिया मधु और सौरभ

दान सारा एक दिन।

किंतु रोता कौन है

तेरे लिए दानी सुमन ?

सौरभ - सुगन्ध



विश्व में हे पुष्प ! तू
सबके हृदय भाता रहा।
दान कर सर्वस्व फिर भी,
हाय, हरषाता रहा ॥

सर्वस्व – सकलो

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



मत व्यथित हो पुष्प, किसको
सुख दिया संसार ने ?
स्वार्थमय सबको बनाया,
है यहाँ करतार ने ॥

व्यथित – দুখী
करतार – সৃষ্টিকর্তা, ঈশ্বৰ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



जब न तेरी ही दशा पर,
दुःख हुआ संसार को !
कौन रोएगा सुमन,
हमसे मनुज निस्सार को ?

मनुज – মানুহ
निस्सार – ক্ষমতাহীন

मूल्यांकन



1 चंद्रमा की किरणें फूल के साथ क्या करती थीं ?

A सुला देती थीं

B सुखा देती थीं

C हँसाती थीं

मूल्यांकन



2 फूल का श्रृंगार किससे किया गया है?

A रेशमी वस्त्रों से

B ओस के मोतियों से

C सुगंधित धूप से

मूल्यांकन



3 कविता के अनुसार संसार किस भाव से भरा है?

A प्रेममय

B करुणामय

C स्वार्थमय